मेरा कॉलम

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'
मो. नं. 73 8657 8657

गर्व से कहो हम सनातनी हैं

घर के सामने वाले मंदिर पर लगे लाउडस्पीकर से 'ग्वाल-बाल सँग गैयाँ डोलें, 'जय गोपाला' सब मुख बोलें' गीत जोर-जोर से बज रहा था और पोती अपने नए फोन पर वीडियो देख रही थी। खूटें पर बंधी मंगला ने अपनी पूंछ से एक मक्खी उड़ाई और गर्दन हिलाकर उस आसमान को देखा जो अब नीले से धुंधला सलेटी हो चुका था। चौदह साल पहले जब वह इस घर में आई थी तब बूढ़ी मां ने अपने कांपते हाथों से उसके माथे पर रोली का टीका लगाया था और उसे साक्षात लक्ष्मी का अवतार घोषित किया था।

आज उसी लक्ष्मी की पीठ पर उम्र का कूबड़ निकल आया था और दूध की आखिरी बूंद तीन साल पहले ही सूख चुकी थी। ठीक वैसे ही जैसे इस घर की बूढ़ी मां की आंखों का पानी और ममता की मलाई सालों पहले सूख चुकी थी। घर के आंगन में सन्नाटा था पर वह सन्नाटा शांति का नहीं बल्कि उस सड़े हुए दफ्तर के कागज की तरह था जिस पर किसी की मौत का फरमान लिखा हो। मंगला निश्चिंत थी क्योंकि उसने सुना था कि इस देश में कुछ जीवों को काटने की सख्त मनाही है और वह तो कोई जंगली सांड या मिथुन भी नहीं थी जिसके वध पर कानून खामोश रह जाए। वह तो सीधी सादी गय्या थी जिसने इस घर के तीन ब'चों को अपनी छाती निचोड़कर पालकर बड़ा किया था।

दरवाजे पर एक बड़ी गाड़ी आकर रुकी जिसकी कर्कश आवाज सुनकर मंगला के कान खड़े हो गए। गाड़ी से उतरा आदमी खादी का कुर्ता पहने था और उसकी जेब में नोटों की गड्डी इस तरह झांक रही थी जैसे किसी अपराधी की जेब से पिस्तौल। घर के बड़े बेटे ने उसकी तरफ देखते हुए अपनी नजरें झुका लीं पर उसकी उंगलियां नोटों को गिनने के लिए मचल रही थीं। बगल के अंधेरे कमरे में खाट पर पड़ी बूढ़ी मां अपनी थरथराती हुई लाठी टेकते हुए बाहर आई और बेटे का हाथ पकड़ लिया।

सब पक्का है न बाबू बेटे ने फुसफुसाकर पूछा।

कागज तैयार है ऊपर से आदेश है व्यापारी ने तंबाकू थूकते हुए कहा।

यह क्या अधर्म कर रहे हो रे लाल मां ने अपनी सूखी छाती पीटते हुए बेटे का कुर्ता खींचा।

तो अब इसके बुढ़ापे का ठेका हम ही थामें॰ बेटे की आवाज में कलयुग का कड़कपन था।

इसने हमें पाला है बेटा और तुम्हारी इस बूढ़ी मां को भी अब खाट पर पड़े रहने की आदत हो गई है तो क्या मुझे भी कल इसी गाड़ी में लाद दोगे॰ मां की आंख से बहता पानी उसके गालों की झुर्रियों में रास्ता ढूंढ रहा था। मंगला ने अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखों से इस बातचीत को समझने की कोशिश की। उसने सोचा कि शायद उसे किसी नई चरागाह में ले जाया जा रहा है जहां हरी घास होगी और सूखा भूसा चबाने से मुक्ति मिलेगी। वह तो इस मुगालते में जी रही थी कि जिस चौखट पर उसने अपनी पूरी जवानी निचोड़ कर दे दी वहां बुढ़ापे में कम से कम दो मुट्ठी सूखी घास और थोड़ा सा दुलार तो नसीब होगा ही। मां दौड़कर मंगला के गले से लिपट गई और दोनों बूढ़ी आंखें एक दूसरे के दुख को बिना शब्दों के बांटने लगीं। मां के हाथ मंगला की पीठ पर ऐसे फिर रहे थे जैसे अपनी सगी बेटी को विदा कर रही हो पर इस विदाई में डोली नहीं मौत का पिंजरा था। बेटे ने कर्रूता से मां को पीछे धकेला तो वह आंगन के कीचड़ में जा गिरी पर उसकी चीख आसमान को चीर न सकी। उसे क्या पता था कि इस देश की आधुनिकता अब बूढ़ी हड्डियों का सूप पीने के लिए लालायित हो चुकी है और मां हो या गाय दोनों की उपयोगिता खत्म होते ही वे सिर्फ एक बोझ बन जाती हैं। गाड़ी का पिछला दरवाजा खुला और उसमें से लोहे की जंजीरों की खनखनाहट गूंज उठी। मंगला को जब खींचकर आगे बढ़ाया गया तो उसके खुरों ने जमीन को कसकर पकड़ लिया मानो वह अपनी मिट्टी और अपनी उस बिलखती हुई मां से आखिरी बार लिपट जाना चाहती हो। बछड़े की याद में और मां की सिसकी सुनकर उसके थनों से दूध की जगह एक अजीब सी मवाद जैसी लाचारी रिसने लगी थी। उसे रह-रहकर अपने उस नन्हे बछड़े की याद आ रही थी जिसे पिछले साल ही इसी बेटे ने कड़वी धूप में बांधकर भूखा मार डाला था ताकि सारा दूध खुद पी सके। मंगला ने हवा में नासिकाएं फुलाई मानो वह अपने उस बिछड़े हुए ब'चे की गंध को हवा के झोंकों में ढूंढ रही हो जो अब धूल बन चुका था। बेटा लाठी लेकर उसके पीछे खड़ा था वही बेटा जो कभी मंगला के दूध की मलाई खाकर पहलवानी का दम भरता था।

चलो भी अब नखरे मत दिखाओ बेटे ने लाठी उसकी रीढ़ पर दे मारी।

राम राम थोड़ा तो रहम करो मां की सिसकी आंगन में बिखर गई।

रहम से पेट नहीं भरता माई बेटे ने कर्रूता से हंसते हुए कहा।

तुझे तेरा ही दूध काटेगा रे मां ने जमीन पर सिर पटकते हुए आखिरी शाप दिया।

ट्रक के उस दमघोंटू अंधेरे में, जहां तड़पते मूक प्राणियों की सड़ी हुई सांसें और मौत का खौफ तैर रहा था, मंगला का दम घुटने लगा। बाहर सड़क किनारे सनातन धर्म के आलीशान होर्डिंग्स पर सुनहरे अक्षरों में चमक रहा था- 'गाय हमारी माई है, सनातन यही सिखाता है', गौ, माता और भू-माता, सनातन का है इनसे नाता और लाउडस्पीकर वेदों की ऋचाएं उगल रहे थे कि गाय 'अघ्न्या' है, इसके भीतर तैंतीस कोटि देवता बसते हैं। इस पावन व्यवस्था के बीच, बंद ट्रक की झिरी से गोवंश संरक्षण के करोड़ों वाले सरकारी बजट के स्लोगन साफ दिख रहे थे। गाड़ी किसी कत्लखाने नहीं, बल्कि चमचमाती 'प्रगतिशील मांस प्रसंस्करण इकाई' के सामने रुकी, जहां सफेद कोट पहने पढ़े-लिखे लोग तैनात थे। वहां दीवारों पर वेदों के उद्धरणों के ठीक बगल में स्व'छता के बड़े-बड़े नियम लिखे थे। तभी एक सरकारी डॉक्टर ने जेब से कलम निकाली और पवित्र गोमाता के उसी मस्तक पर, जहां कभी तिलक सजता था, 'अनुपयोगी और वध के योग्य' की अमिट सरकारी सील दाग दी, ताकि सनातन धर्म का कागजी नियम भी न टूटे और मांस का करोड़ों का व्यापार भी बिना किसी बाधा के मजे से चलता रहे। भीतर एक बड़ा सा हॉल था जहां कतार में खड़ी गायें अपनी बारी का इंतजार कर रही थीं। वहां कोई चीख-पुकार नहीं थी बल्कि एक यांत्रिक खामोशी थी जो किसी भी श्मशान से 'यादा डरावनी थी। मंगला को लगा कि शायद यहां कोई बड़ा उत्सव चल रहा है क्योंकि बिजली के लट्टू बड़ी तेजी से टिमटिमा रहे थे। तभी सामने वाले बड़े लोहे के कटर के पास से एक परछाईं उभरी जो हाथ में चमचमाती हुई आरी लिए हुए थी। मंगला ने अपनी गर्दन घुमाई और उस कसाई की आंखों में देखा। कसाई ने अपनी टोपी उतारी और उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। वह कसाई कोई और नहीं बल्कि होरी का वही परपोता था जो बरसों पहले गांव छोड़कर शहर कमाने आया था और आज अपनी ही उस गाय को काटने के लिए सरकारी नौकरी पर तैनात था जिसे उसके परदादा ने अपनी आखिरी सांस देकर भी नहीं पा सका था। दोनों की आंखें मिलीं और मशीन का स्विच ऑन हो गया। उधर गांव के आंगन में बूढ़ी मां का साया हमेशा के लिए शांत हो चुका था।

बिजली कम्पनियों में मौत का बंटवारा गलत

25 वर्षों से भटक रहे बिजली कर्मचारियों के आश्रित, बिना शर्त नौकरी देने की उठी मांग

खरगोन। खरगोन में मध्य प्रदेश विद्युत मंडल के समय से लंबित अनुकंपा नियुक्ति के मामलों को लेकर तकनीकी कर्मचारी संघ ने आवाज बुलंद की है। प्रांतीय महासचिव हरेंद्र श्रीवास्तव के नेतृत्व में संघ ने ऊर्जा मंत्री को पत्र सौंपकर मांग की है कि पिछले 25 वर्षों से भटक रहे सभी आश्रितों को बिना किसी शर्त के अनुकंपा नियुक्ति दी जाए।

वर्ष 2000 से लगा प्रतिबंध, 2014 की नीति से उपजा विवाद

इस मांग का समर्थन संघ के प्रमुख पदाधिकारियों एसके मौर्य, केएल लोखंडे, एसके शाक्य, शशि उपाध्याय, दशरथ शर्मा, टी डेविड, मोहन दुबे, राजकुमार सैनी, अजय कश्यप, लखन सिंह राजपूत, विनोद दास, इंद्रपाल सिंह, संदीप दीपांकर, राकेश नामदेव और मदन पटेल ने किया है। संघ का कहना है कि वर्ष 2000 से जारी रोक और वर्ष 2014 की विसंगतिपूर्ण नीति के कारण बीमारी या प्राकृतिक मृत्यु का शिकार हुए कर्मचारियों के परिवार आज भी न्याय के लिए दर-दर भटक रहे हैं।

विद्युत मंडल के दौर में खराब माली हालत का हवाला देकर 1 सितंबर 2000 से अनुकंपा नियुक्तियों पर पूरी तरह रोक लगा दी गई थी।

बिजली कंपनियों के गठन के बाद भी यह प्रतिबंध लगातार जारी रहा। इसके बाद वर्ष 2014 में विभाग ने एक नई अनुकंपा नीति लागू की। इस नीति के तहत प्रावधान किया गया कि वर्ष 2000 से 2012 के बीच केवल दुर्घटना में जान गंवाने वाले कार्मिकों के आश्रितों को ही नौकरी दी जाएगी। इस फैसले से बीमारी या सामान्य वजहों से जान गंवाने वाले कर्मचारियों के परिजन दौड़ से बाहर हो गए और पिछले 25 सालों से लगातार उपेक्षा का शिकार हो रहे हैं।

भेदभावपूर्ण नीति के विरोध में लामबंद हुए कर्मचारी

बिना शर्त नियुक्ति देने पर अड़े पदाधिकारी

कर्मचारी संघ के पदाधिकारियों ने सरकार की इस नीति की कड़े शब्दों में आलोचना की है। प्रांतीय महासचिव ने कहा कि विभाग द्वारा मौत का इस तरह से वर्गीकरण करना पूरी तरह से गलत और अमानवीय है।

किसी भी कारण से जान गंवाने वाले कर्मचारी के परिवार की स्थिति एक जैसी ही होती है। संघ ने ऊर्जा मंत्री से साफ तौर पर कहा है कि सभी बिजली कंपनियों में जितने भी अनुकंपा के लंबित मामले हैं, उन्हें तुरंत निपटाया जाए। सभी आश्रितों को बिना किसी जटिल नियम या शर्त के तत्काल प्रभाव से रोजगार देकर उनके परिवारों को आर्थिक संबल प्रदान किया जाना चाहिए।

रोजगार मिला, लेकिन शहर छूट गया, नेपानगर के युवाओं की नई हकीकत

नेपानगर। एक समय नेपा मिल्स के सहारे स्थानीय स्तर पर रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध थे, लेकिन बदलते औद्योगिक परिदृश्य और सीमित रोजगार विकल्पों के बीच बड़ी संख्या में युवाओं का रुख अब इंदौर, पुणे, सूरत और हैदराबाद जैसे शहरों की ओर हो गया है।

रोजगार के लिए बाहर जाना अब नेपानगर के अनेक परिवारों की स्थापित हकीकत बन चुका है। पढ़ाई पूरी करने के बाद बड़ी संख्या में युवाओं के सामने शहर में अवसरों की कमी और बाहर उपलब्ध रोजगार के बीच चुनाव की स्थिति बनती है।

स्थानीय रोजगार की सीमाएं, बड़े शहरों की ओर बढ़ते कदमः

स्थानीय स्तर पर निजी क्षेत्र में अधिकांश रोजगार 8 से 15 हजार रुपये प्रतिमाह के बीच बताए जाते हैं, जबकि कई स्थानों पर कार्य अवधि 10 से 12 घंटे तक रहती है। ऐसे में परिवार चलाना, बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य खर्च और भविष्य की आर्थिक सुरक्षा जैसी आवश्यकताओं को पूरा करना मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है। निजी स्कूलों की बढ़ती फीस, चिकित्सा खर्च और महंगाई के बीच नियमित बचत कर पाना भी आसान नहीं रह गया है।

दूसरी ओर इंदौर, पुणे, सूरत और हैदराबाद जैसे शहरों में फैक्ट्री, फार्मा, सेल्स, वेयरहाउस, आईटी, मॉल, केटरिंग और निर्माण क्षेत्र में काम करने वाले युवाओं को योग्यता और क्षेत्र के अनुसार 25 से 50 हजार रुपये प्रतिमाह तक वेतन मिलने की संभावना रहती है। यही कारण है कि पढ़ाई पूरी करने के बाद रोजगार की तलाश में बड़ी संख्या में युवा शहर छोड़ने का निर्णय लेते हैं।

बाहर रोजगार, लेकिन जुड़ाव अब भी नेपानगर से

स्थानीय लोगों का मानना है कि अधिकांश परिवार अपने बच्चों को पसंद से नहीं, बल्कि बेहतर रोजगार और भविष्य की संभावनाओं के कारण बाहर भेजते हैं। कई युवा पढ़ाई के बाद स्थायी रूप से बड़े शहरों में रोजगार से जुड़ जाते हैं, जबकि कुछ समय-समय पर घर लौटते रहते हैं।

बेहतर वेतन की तलाश में इंदौर, पुणे, सूरत और हैदराबाद का रुख, त्योहारों पर ही लौटते हैं घर

इसके बावजूद त्योहारों, पारिवारिक आयोजनों और सामाजिक कार्यक्रमों के दौरान नेपानगर लौटने की परंपरा आज भी बनी हुई है। रोजगार के लिए शहरों की ओर बढ़ते कदमों के बीच भी युवाओं और परिवारों का भावनात्मक जुड़ाव अपने शहर से बना हुआ है, जो नेपानगर की सामाजिक पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

विश्व माहवारी स्वच्छता दिवस पर जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

आलीराजपुर। मासिक धर्म स्वास्थ्य, गरिमा और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए जिला प्रशासन आलीराजपुर द्वारा पहली बार विश्व मासिक धर्म स्वच्छता दिवस का आयोजन किया। इस अवसर पर महिलाओं एवं किशोरियों के स्वास्थ्य, सम्मान और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से ‹मिशन सखी स्वाभिमान› का शुभारंभ भी किया गया।

कार्यक्रम के अंतर्गत कलेक्टर श्रीमती नीतू माथुर द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर में स्थापित गरिमा कक्ष का उद्घाटन किया गया। महिलाओं के लिए अनुकूल एवं सम्मानजनक वातावरण प्रदान करने के उद्देश्य से स्थापित यह गरिमा कक्ष महिलाओं के लिए सुविधा, सुरक्षा और गरिमा का प्रतीक है। यह पहल प्रशासन और समुदाय के साझा प्रयासों का उदाहरण है, जो महिलाओं की आवश्यकताओं और कल्याण को प्राथमिकता देने की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। अपनी तरह की यह एक अभिनव पहल है, जो देशभर में महिला-अनुकूल सार्वजनिक संस्थानों के निर्माण के लिए एक प्रेरणादायी मॉडल प्रस्तुत करती है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कलेक्टर श्रीमती माथुर ने कहा कि ‹यह शर्म की नहीं, गरिमा की बात है।› उन्होंने कहा कि मासिक धर्म एक प्राकृतिक जैविक प्रक्रिया है और इसके बारे में समाज में खुलकर चर्चा होना आवश्यक है। मासिक धर्म से जुड़े मिथकों, वर्जनाओं, भेदभावपूर्ण व्यवहार तथा अस्पृश्यता जैसी कुप्रथाओं को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि इस विषय को संकोच नहीं बल्कि सम्मान और गरिमा के साथ देखा जाना चाहिए।

श्रीमति कलावती पंच तत्व में विलीन

सैलाना। स्थानीय विवेकानंद मार्ग के सुप्रसिद्ध शर्मा परिवार की सौ. कलावती शर्मा धर्मपत्नी वैद्य सोमेश्वर शर्मा एवं डॉ सुशील शर्मा, पं. सोनू शर्मा, पं मोनू शर्मा की ज्येष्ठ मातुश्री भरेपूरे परिवार को छोड़ कर 74 वर्ष की आयु में निधन हुआ। गुरुवार को जैसे ही सैलाना में आपका शोक सन्देश प्राप्त हुआ सम्पूर्ण सैलाना एवं आस पास के क्षेत्र में शोक की लहर छा गई। श्री मति शर्मा का दाह संस्कार सामाजिक रीति रिवाज और पूरे वैदिक मंत्रोच्चार के साथ किया गया। जहां परिजनों ने मुखाग्नि दी। शवयात्रा में बड़ी संख्या में क्षेत्र के चिर परिचित लोगों और समाज जनों ने भाग लिया और श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

शासकीय आई.टी.आई. में सत्र 2026-27 हेतु ऑनलाइन प्रवेश प्रारंभ

आलीराजपुर। औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था के प्राचार्य द्वारा बताया की शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थाओं (आई.टी.आई.) में सत्र 2026-27 हेतु ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया प्रारंभ हो गई है। इच्छुक अभ्यर्थी https://mpiticounselling.co.in के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। प्रवेश विवरणिका www.dsd.mp.gov.in पर उपलब्ध है। जिले की आई.टी.आई. आलीराजपुर, जोबट, भाभरा, कट्ठीवाड़ा एवं उदयगढ़ में इलेक्ट्रीशियन, फिटर, COPA, ड्राफ्ट्समैन सिविल, मैकेनिक डीजल, हिंदी स्टेनोग्राफर, सोलर टेक्नीशियन, स्वीइंग टेक्नोलॉजी एवं वेल्डर सहित विभिन्न ट्रेडों में प्रवेश दिया जाएगा। अधिकांश ट्रेडों हेतु न्यूनतम योग्यता 10वीं तथा स्वीइंग टेक्नोलॉजी एवं वेल्डर हेतु 8वीं उत्तीर्ण निर्धारित है।

भीषण गर्मी के बीच सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था पर टिकी लोगों की नजर

पिछले वर्षों में लगते थे मटके, इस बार राहगीरों को राहत की तलाश

नेपानगर। नगर में लगातार बढ़ रही गर्मी के बीच लोगों को पेयजल सुविधा उपलब्ध कराने को लेकर इस बार अलग स्थिति देखने को मिल रही है। गर्मी के मौसम में पूर्व वर्षों के दौरान नगर के विभिन्न प्रमुख स्थानों पर प्याऊ और मटकों की व्यवस्था दिखाई देती थी, लेकिन इस बार कई स्थानों पर ऐसी व्यवस्थाएं सीमित नजर आ रही हैं। बढ़ते तापमान के बीच राहगीरों और आम लोगों को राहत की अपेक्षा बनी हुई है।

भीषण गर्मी में पेयजल की जरूरत और बढ़ीः

नगर में दोपहर के समय तापमान बढ़ने के साथ बाजार, बस स्टैंड और प्रमुख मार्गों पर आवाजाही करने वाले लोगों को पेयजल की आवश्यकता अधिक महसूस हो रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि गर्मी के दौरान सार्वजनिक स्थानों पर ठंडे पेयजल की व्यवस्था लोगों के लिए राहत का माध्यम बनती रही है। कुछ स्थानों पर पूर्व में रखे गए मटके भी खाली दिखाई देने की बात सामने आई है। लोगों का मानना है कि इस मौसम में सार्वजनिक पेयजल व्यवस्था राहगीरों, मजदूरों और बाहर से आने वाले लोगों के लिए उपयोगी साबित हो सकती है।

गर्मी बढ़ने के साथ बढ़ी उम्मीदें:

नगर में हर वर्ष गर्मी के दौरान विभिन्न सामाजिक संगठनों और जनप्रतिनिधियों द्वारा भी पेयजल व्यवस्था की पहल देखने को मिलती रही है।

इस बार भीषण गर्मी के बीच लोगों की अपेक्षा है कि सार्वजनिक स्थानों पर पेयजल की पर्याप्त व्यवस्था दिखाई दे, ताकि आम नागरिकों को राहत मिल सके। लगातार बढ़ते तापमान के बीच लोगों की नजरें अब इस दिशा में होने वाली व्यवस्थाओं पर भी बनी हुई हैं।

श्रीमती जोशी को मिला मां देवी अहिल्या माता गौरव पुरस्कार

सैलाना। सैलाना नगर परिषद की पूर्व अध्यक्ष समाज सेविका क्रांति जोशी को इन्दौर में गुरुवार को एक गरिमामय बड़े समारोह में उनकी जनसेवा और सामाजिक दायित्वों में लगनपूर्वक कार्य करते रहने के जज्बे के लिए सम्मानित किया गया। ये सम्मान उन्हें पूर्व मंत्री और समाजसेविका ऊषा ठाकुर और पदमश्री जनक पलटा के कर कमलों से नवाजा गया। दरअसल इन्दौर के ऐतिहासिक जाल सभागृह में देवी अहिल्या बाई जन्म जयंती समारोह

समिति ने सामाजिक, धार्मिक, महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सतत उत्कृष्ट योगदान देने वाली चार सक्रिय महिला विभूतियों को ‹मां देवी अहिल्या माता गौरव पुरस्कार› से सम्मानित किया गया। यही सम्मान सैलाना की क्रांति जोशी को भी मिला। अन्य तीन विभूतियों में भारती कृशवाह, भारती ठाकुर और माधुरी यादव शामिल हैं।

इसलिए मिला उन्हें ये बड़ा सम्मान–दरअसल क्रांति जोशी को ये बड़ा सम्मान महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सतत कार्य करने पर एवम् 27 मंदिरों के जीर्णोद्धार के संकल्प के कारण मिला। क्रांति जोशी अपनी टीम के साथ वनवासी क्षेत्र के क्रांति जोशी वनवासी क्षेत्र में जीर्ण शीर्ण हो चुके मंदिरों के जीर्णोद्धार कार्य में अपनी टीम के साथ लगी हुई हैं।वे अरिहंत महिला साख संस्था के माध्यम से महिलाओं की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने के अभियान में भी काफी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं।इन कारणों से उन्हें इस सम्मान के लिए चुना गया उन्हें शाल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह, प्रशस्ति पत्र के साथ एक लाख ग्यारह हजार का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया। पूर्व मंत्री ऊषा ठाकुर, समाज सेविका पद्म श्री जनक पलटा एवम जन्म जयंती समारोह समिति अध्यक्ष जयंत भिसे सहित कई जानी मानी विभूतियाँ समारोह में उपस्थित थी। अनेक गणमान्यजनों ने इस बड़े सम्मान के लिए क्रांति जोशी को बधाई दी व कहा कि इस सम्मान ने न केवल सैलाना क्षेत्र का ही बल्कि पूरे जिले का गौरव बढ़ाया हैं।